कृषक महिलाओं हेतु श्रम व समय बचत के उन्नत कृषि उपकरण

सुमित्रा कुमारी मीणा[1]

1. प्रस्तावना
2. समय व श्रम बचत के उपाय
3. उन्नत कृषि उपकरण

1. प्रस्तावना

महिला किसान का ध्यान करते ही खेतों में बीज बोती, फसल काटती, खाद बनाती, खरपतवार निकालती, रोपाई–निराई आदि श्रम साध्य कार्य करती महिला की तस्वीर एकाएक कौंध जाती है, यही नहीं पशुओं की देखरेख, बच्चों का पालन–पोषण व अन्य घरेलू कामों की जिम्मेदारी भी महिला पर ही रहती है जिसके परिणाम स्वरुप वह शारीरिक व मानसिक तनाव से ग्रस्त रहती है जिसका कुप्रभाव उसके स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

वर्तमान में कृषि, पशुपालन व विभिन्न कार्यों को कम श्रम व समय में अधिक दक्षता से सम्पन्न करने हेतु भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के संस्थान–केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, (उड़ीसा), केन्द्रीय कृषि एवं अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल (मध्य प्रदेश) एवं अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना के तहत राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के गृहविज्ञान महाविद्यालयों द्वारा विभिन्न उन्नत कृषि उपकरण विकसित किये जा चुके हैं। परन्तु किसान महिलाओं को इन उपकरणों की जानकारी नही होने के कारण आज भी अधिकतर महिलाएं परम्परागत तरीकों व परम्परागत यंत्रों का ही उपयोग करती हैं। विभिन्न शोध परिणामों से ज्ञात हुआ है कि यदि किसान महिलाएं अपनी कार्य प्रणाली में थोडा परिवर्तन कर लें और उन्नत कृषि उपकरणों का प्रयोग करें तो वे शारीरिक व मानसिक तनाव को कम कर सकती हैं और कार्य क्षमता को बढ़ा सकती हैं।

2. समय व श्रम बचत के उपायः

1. झुककर कार्य करने की अपेक्षा बैठकर कार्य करना चाहिए क्योंकि झुककर कार्य करने से कमर, गर्दन व पांव की मांसपेशियों में दबाव व तनाव उत्पन्न होता है और थकान जल्दी होने लगती है।
2. भारी कार्यों को करते समय बीच–बीच में विश्राम कर लेना चाहिए, जिससे मांसपेशियों को आराम मिल सके व उनमें उत्पन्न दबाव व तनाव भी कम हो सके। विश्राम करने से पुनः स्फूर्ति आ जाती है।
3. थोड़ी–थोड़ी देर में शारीरिक मुद्रा बदलते रहना चाहिए, शरीर के अंगो को उचित मुद्रा व स्थिति में रखने पर कार्यकर्त्ता को थकान कम होती है साथ ही शारीरिक शक्ति भी कम लगती है।
4. शारीरिक वजन व क्षमता के अनुसार ही भार उठाना चाहिए, व्यक्ति को स्वयं के वजन का 30 प्रतिशत भार ही उठाना चाहिए, तथा भार उठाते समय कमर से झुकने की बजाय जांग की मांसपेशियों पर जोर डालें क्योंकि वे ज्यादा मजबूत होती हैं।

3. उन्नत कृषि उपकरण

घुमावदार स्टूल एवं स्टेण्डः घूमने वाला स्टूल व स्टेण्ड एक विकसित इकाई है । जो की दुधारू पशुओं का दूध निकालने की प्रक्रिया को सरल सुगम बनाने में उपयोगी है, पारम्परिक तौर पर पशु का दूध

[1] गृह वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर (राज.)।

निकलने के लिए उकडूं अवस्था में बैठना पड़ता है जिससे अत्यधिक कष्ट व थकान महसूस होती है । इस उपकरण के प्रयोग से दोहक आरामदायक मुद्रा में बैठकर दूध दोहने का कार्य आसानी से कर सकता है क्योंकि पहियों से स्टूल एवं स्टेण्ड को आगे पीछे करने में सुविधा रहती है। दूध दोहने में थकान नही होती, समय भी कम लगता है तथा दूध फैलने का डर नही रहता जिससे मानसिक तनाव से भी राहत मिलती है।

ट्यूब्यूलर मक्का छीलक यन्त्रः मक्का छीलक उपकरण का प्रयोग विशेषतौर पर सूखे भुट्टों से दाने निकालने हेतु किया जाता है। भुट्टो से दाने निकालने का पारम्परिक ढंग अत्यंत कठिन व थकाने वाला होता है क्योंकि यह कार्य भुट्टों को डंडे से कूट–पीट कर या हाथों से किया जाता है। जिससे कंधों में भारी दर्द महसूस होता है व अँगुलियों का ऊपरी हिस्सा सख्त होने लगता है । मक्का छीलक यन्त्र की मदद से सूखे भुट्टो से दाने निकलने का कार्य आसानी से कम श्रम व समय में किया जा सकता है स इस काम को करने के लिए सूखे भुट्टे को मक्का छीलक उपकरण में फंसा कर विपरीत दिशा में घुमाया जाता है जिससे दाने तेजी के साथ बिना टूटे निकल जाते हैं। यह उपकरण बाजार में लगभग 100–120 रूपये मिलता है, वजन में हल्का व चलाने में आसन है, इसकी सहायता से 18–20 किलो दाने प्रति घंटे की दर से निकले जा सकते हैं स

उन्नत दरांतीः इस उपकरण की मदद से कम श्रम व समय में सरलता से फसल व चारा–घास की कटाई की जा सकती है स आज कल बाजार में सस्ती, वजन में हल्की व उत्तम क्षमता वाली विभिन्न प्रकार की

उन्नत दरांती जैसे नवीन दरांती, देव एग्रो आदि उपलब्ध हैं। ये दरांतियां वजन में हल्की एवं गेहूं व धान जैसी पतले तने वाली फसलों को सतह तक काटने के लिए उत्तम हैं। इस प्रकार की दरांती की ब्लेड कार्बन स्टील की बनी होने के कारण इसे धार लगाने की जरुरत नही पड़ती। यह बाजार में लगभग 60–150रूपये में उपलब्ध है।

रेक (खोड़ी): पशुओं के बाड़े की सफाई, सूखे चारे, गोबर, मिट्टी आदि को एकत्रित करने में रेक अथवा खोड़ी का उपयोग उत्तम है। इसके उपयोग से कार्य आसन हो जाता है, हाथ साफ रहते हैं, झुकना नही पड़ता इस कारण से कमर दर्द से राहत मिलती है। यह लगभग 250 रूपये तक के मूल्य में मिल जाती है। इसके उपयोग से थकान में लगभग 38 प्रतिशत तक की कमी होती है।

पौध रोपाई यन्त्रः यह पाइप का बना होता जो कि उचित गहराई में पौध रोपने हेतु काम में लिया जाता है। इस यन्त्र की सहायता से पौध को रोपने के लिए प्रत्येक बार झुकना अथवा मुड़ना नही पड़ता, जिससे कमर दर्द से राहत मिलती है साथ ही पारम्परिक कार्य की तुलना में आधे समय में पौध रोपाई का कार्य आसानी से हो जाता है । कम श्रम एवं समय में निपुणता से रोपाई के कार्य हेतु यह यन्त्र काफी कारगर है।

निष्कर्षः उपरोक्त उपकरणों के अलावा भी अनेक यन्त्र जैसे मूंगफली छीलक, बैट्री छिडकाऊ यन्त्र, कपास चुनने की मशीन, पेडल व हस्त चलित मक्का छीलक मशीन, अनाज छानने का छलना इत्यादि एवं कृषि कार्यों के दौरान धूप, धूल, मिट्टी, भूसी आदि से बचाव हेतु सुरक्षात्मक वस्त्र भी विकसित किये गये हैं। कृषक महिलाओं को कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विभागों के माध्यम से श्रम–भार को कम करने के लिए उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग के प्रशिक्षण एवं अधिकाधिक प्रचार– प्रसार द्वारा महिलाओं को जागरूक किया जाये तो निश्चय ही ये उपकरण कृषक महिलाओं की थकान कम करने के साथ साथ उनके कार्य करने के समय की बचत में भी मददगार सिद्ध होंगे।